Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **31.03.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

हमें हर समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह आदेश अपने सामने रखना चाहिए कि जो अपने लिए चाहते हो वही अपने भाई के लिए चाहो यदि अपने दोष को छिपाना पसन्द है तो दूसरे के लिए भी यही भावना होनी चाहिए और यही वह स्वर्ण सिद्धांत है जो सामज में शान्ति के लिए भी अनिवार्य है

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

दुनया में कोई मनुष्य ऐसा नहीं जो प्रत्येक दोष से, प्रत्येक दृष्टि से विशुद्ध हो। अल्लाह तआला का एक गुण 'सत्तार' है जो हमारे दोषों को छिपाता है। यदि मनुष्य की ग़लतियाँ, दोष एवं पाप प्रकट होने लगें तो किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल न रहे। अल्लाह तआला जो सत्तारुल उयूब (दोषों को छिपाने वाला) है और ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूब (पापों को क्षमा करने वाला) है उसने हम पर उपकार करते हुए हमें इस्तिग़फ़ार की दुआ सिखाई कि तुम जहाँ अपने दोषों एवं ग़लतियों से बचने का प्रयास करो, वहाँ इस्तिग़फ़ार भी किया करो तो मैं तुम्हारे गुनाहों को भी माफ़ करुंगा, तुम्हारे दोषों को छिपाऊँगा, तुम्हारी दुआओं को क़बूल करुंगा। सामान्यतः तो अल्लाह तआला प्रत्येक दोष को छिपाता है। अल्लाह तआला की क्षमाशीलता विशेष रूप से उन लोगों को भी अपनी चादर में लपेटती है जो इस्तिग़फ़ार करने वाले हैं। 'ग़िफ़र' का अर्थ भी छिपाना और ढांकना होता है तथा यही अर्थ न्यूनाधिक सतर (छिपाना) का है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि इस्लाम ने जो ख़ुदा पेश किया है और मुसलमानों ने जिस ख़ुदा को माना है वह रहीम, करीम, हलीम, तव्वाब और ग़फ़्फ़ार है। जो मनुष्य सच्ची तौबा करता है, अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल करता है तथा उसके पापों को क्षमा कर देता है। परन्तु दुनया वाले, यदि कोई व्यक्ति गुनाह अथवा किसी दोष को छोड़ भी दे, तब भी उसे दोष पूर्ण तथा सन्देह की दृष्टि से देखने वाले हैं। परन्तु अल्लाह तआला कैसा करीम है कि मनुष्य हज़ारों पाप करके भी उसकी ओर पलटता है तो क्षमा कर देता है। फ़रमाया- दुनया में कोई इंसान ऐसा नहीं जो इतना अधिक अनदेखा करे जितना ख़ुदा तआला करता है, केवल नबियों के अतिरिक्त। ख़ुदा तआला के बाद नबी हैं जो इतना कर सकते हैं और इसके अतिरिक्त कोई नहीं करता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ुदा तआला की सत्तारी ऐसी है कि वह इंसान के गुनाहों तथा दोषों को देखता है परन्तु अपनी इस विशेषता के कारण उसके दोषों को उस समय तक, जब तक कि वे निश्चित सीमा से न बढ़ जाए, ढांकता है परन्तु मनुष्य किसी दूसरे की ग़लती देखता भी नहीं और शोर

मचाता है। आप फ़रमाते हैं- अतः विचार करो कि उसकी दया और कृपा की कितनी महान विशेषता है। फ़रमाया- यदि अल्लाह तआला पकड़ने पर आए तो सबको नष्ट कर दे परन्तु उसका रहम और दया अत्यंत विस्तृत है तथा उसके प्रकोप पर भारी है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यदि हम इस बात को समझ लें, और अपने साथियों, अपने भाईयों, अपने से सम्बंधित लोगों के मामलों की टोह न लगाते फिरें, जिज्ञासा न करें, उनकी दुर्बलताओं को तलाश न करते फिरें तो एक प्यार और मुहब्बत वाला तथा शांतिपूर्ण समाज स्थापित हो सकता है। हममें से अनेक ऐसे हैं जो दूसरे के दोषों को छिपाने के बजाए दूसरों के दोष प्रकट करने के प्रयास में होते हैं और जब उनके अपने विषय में कोई बात कर दे अथवा किसी माध्यम से उनको यह पता चल जाए कि अमुक व्यक्ति ने मेरे विषय में इस प्रकार की बात की थी तो क्रोधित हो जाते हैं, अत्यंत क्रोधित होकर मरने मारने को तय्यार हो जाते हैं। हमें हर समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह निर्देश सामने रखना चाहिए कि जो अपने लिए चाहते हो वही अपने भाई के लिए चाहो। अतः अपने लिए दोष छिपाना पसन्द है तो दूसरों के लिए भी यही भावना होनी चाहिए और यह स्वर्ण नियम है जो समाज की शांति के लिए भी अनिवार्य है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः दोष देखकर बजाए उस दोष को फैलाने के, प्रत्येक को इस्तिग़फ़ार करना चाहिए। अल्लाह तआला निःस्वार्थ है तथा इस बात से डरना चाहिए कि हमारे भीतर भी जो असंख्य दोष हैं, वे कहीं प्रकट न हो जाएँ। यदि नेक नीयत से मनुष्य दूसरों के दोषों को छिपाए तो अल्लाह तआला कृपाओं का उत्तराधिकारी बनता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को सदैव याद रखना चाहिए कि यदि ख़ुदा तआला पकड़ने पर आए, हिसाब किताब लेने लगे तो सबको नष्ट कर दे। अतः अत्यंत भय का अवसर है और हर समय इस्तिग़फ़ार करते रहने की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि जिसने अपने मुसलमान भाई के किसी दोष को छिपाया अल्लाह क़्यामत के दिन उसके दोष को छिपा लेगा, उसकी पर्दा पोशी फ़रमाएगा, उसे ढाँप देगा और सत्तारी फ़रमाएगा। और जो किसी अपने मुसलमान भाई के दोष को प्रकट करता है, उसकी बुराईयाँ करता है, उसके दोष को देखकर लोगों को बताता फिरता है, अल्लाह तआला उसके दोष और बुराई को इस प्रकार प्रकट करेगा कि उसके घर में उसको अपमानित कर देगा। अतः यह बड़ा भयावह डरावा है, भय का स्थान है। अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण करने के लिए सदैव दूसरों के दोषों को देखने के बजाए अपने ऊपर दृष्टि रखनी चाहिए तभी हम अल्लाह तआला के रहम और कृपा को ग्रहण कर सकते हैं। लोग कह देते हैं कि यदि किसी की बुराई प्रकट नहीं करेंगे तो सुधार किस प्रकार होगा। सदा याद रखना चाहिए कि यदि किसी की का कोई दोष जमाअत के निज़ाम को हानि पहुंचाने का कारण बन रहा है अथवा समाज के एक वर्ग को भी अपनी लपेट में लेकर ख़राब कर रहा है तो फिर सुधार के लिए जो लोग नियुक्त हैं, जमाअत का अमीर है, जमाअत में सदर जमाअत है, उन तक बात पहुंचा दें अथवा मुझे लिख दें ताकि सुधार की ओर ध्यान हो। परन्तु किसी की बुराई देखकर उसको फैलाना, दूसरों तक पहुंचाना हर हाल में वर्जित है क्यूँकि इसके द्वारा बुराईयाँ समाप्त होने के बजाए फैलती हैं। इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निर्देश सदैव याद रखना चाहिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यदि तू लोगों के दोषों के पीछे पड़ेगा तो

उन्हें बिगाड़ देगा और समाज की शांति को भी भंग करेगा और फिर जब जगह जगह लोगों में बयान की जाएँ ये बातें तो फिर ऐसे लोग जिनमें ये दोष हैं सुधार के बजाए उनमें ज़िद पैदा हो जाती है और फिर ज़िद में आकर वे दूसरों को भी अपने जैसा बनाने का प्रयास करते हैं, अपनी परिधि को विस्तृत करते जाते हैं। छिपाना समाप्त हो जाता है तथा जब छिपाना न रहे तो सुधार का अवसर भी समाप्त हो जाता है।

अतः यहाँ मैं उन लोगों को भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ जिनके हवाले जमाअत के काम भी हैं, विशेष रूप से सुधार करने वाला विभाग कि अत्यंत सावधानी से तथा सहानुभूति की भावना रखते हुए सुधार का काम करें। कभी किसी भी व्यक्ति को यह आभास नहीं होना चाहिए कि मेरी अमुक दुर्बलता अमुक ओहदेदार के कारण फैली है, लोगों को पता लगा है। यदि यह आभास हो जाए तो फिर इसकी प्रतिक्रिया बड़ी तेज़ होती है। ऐसे ओहदेदारों को अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि मैंने तो तुम्हें जमाअत की सेवा का अवसर दिया था इस लिए कि मेरी विशेषताओं को अधिक से अधिक अपनाओ परन्तु यहाँ तो तुम मेरी सत्तारी की विशेषता से उलट कर चलकर व्याकुलता और द्वेष पैदा करने का कारण बन रहे हो। अल्लाह तआला सत्तारी को कितना पसन्द करता है तथा सत्तारी करने वाले को कितना अधिक वरदान देता है इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि मुसलमान मुसलमान का भाई है, वह उस पर अत्याचार नहीं करता और न उसे अकेला छोड़ता है। जो व्यक्ति अपने भाई की कठिनाई को दूर करने में लगा रहता है अल्लाह तआला उसकी आवश्यकताएँ पूरी करता है और जिसने किसी मुसलमान की कठिनाई दूर की अल्लाह तआला क़्यामत के दिन उसकी एक कठिनाई कम कर देगा और जो किसी मुसलमान की सत्तारी करता है अल्लाह क़्यामत के दिन उसकी सत्तारी फ़रमाएगा।

अतः उस दयालु और कृपालु ख़ुदा की दया और कृपा को ग्रहण करने के लिए सत्तारी और पर्दा पोशी अत्यंत आवश्यक है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फ़रमाते हैं- इंसान के ईमान का भी यही कमाल है कि तख़ल्लुक़ बिल्लाह करे अर्थात जो सदाचार ख़ुदा तआला में हैं तथा विशेषताएँ हैं उनका यथासम्भव अनुसरण करे तथा अपने आपको ख़ुदा तआला के रंग में रंगीन करने का प्रयत्न करे। उदाहरणतः ख़ुदा तआला में क्षमाशीलता है, इंसान भी क्षमाशील बने। ख़ुदा तआला सत्तार है इंसान को भी सत्तारी की शान से अंश लेना चाहिए। केवल ज़बान का आनन्द तथा ख़ुशी का वातावरण पैदा करने के लिए दूसरों की बुराईयों को फैलाना, अत्यंत घोर पाप है जिससे प्रत्येक अहमदी को बचना चाहिए। हाँ, किसी का दोष देखकर सच्ची सहानुभूति में आवश्यकता है कि उसके सुधार का प्रयास किया जाए ताकि वह बुराई अथवा दुर्बलता उस व्यक्ति में से दूर हो जाए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- चाहिए कि जिसे दुर्बल पावे उसे गुप्त रूप से नसीहत करे। चुप चाप अलग होकर उसे उपदेश दो यदि न माने तो उसके लिए दुआ करो। दुआ में बड़ी असर है, उस मनुष्य पर बड़ा ही खेद है कि एक के दोष को बयान तो सौ बार करता है परन्तु दुआ एक बार भी नहीं करता। दोष किसी का उस समय बयान करना चाहिए जब पहले कम से कम चालीस दिन उसके लिए रो रो कर दुआ की हो। हमारा यह अभिप्रायः नहीं है कि दोष के समर्थक बनो बल्कि यह कि उसका प्रसार और ग़ैबत न करो। उस दोष को देखकर फैलाओ नहीं, न ही लोगों के सामने बताओ, न पीछे बताओ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह सिलसिला चल नहीं सकता जब तक कि दया, दुआ, सत्तारी तथा परस्पर दयालुता न हो। आप अलै. हमें क्या देखना चाहते हैं? यही कि हम आपस में एक दूसरे के लिए दया भाव उत्पन्न करें। एक दूसरे के लिए दुआ करने वाले हों, एक दूसरे की सत्तारी करने वाले हों। एक अवसर पर आपने फ़रमाया कि हमारी जमाअत को चाहिए कि किसी भाई का दोष देखकर उसके लिए दुआ करें परन्तु यदि वे दुआ नहीं करते तथा उसको बयान करके दूर सिलसिला चलाते हैं तो पाप करते हैं। फ़रमाया कि कौनसा ऐसा दोष है कि दूर नहीं हो सकता, इस लिए दुआ के द्वारा दूसरों की सहायता करनी चाहिए और जब हम इस प्रकार एक दूसरे की सहायता करेंगे और बजाए एक दूसरे के दोष निकालने तथा दूसरों की बुराईयों को फैलाने के एक दूसरे के लिए दुआ कर रहे होंगे तभी हम वह वास्तविक जमाअत बन सकते हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बनाना चाहते हैं और यही एक वास्तविक मुसलमान की आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार अवस्था होनी चाहिए तथा यही हालत है जो हमारी मुक्ति, क्षमा और सत्तारी का भी माध्यम बनती है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की शरण में आने तथा उसकी कृपाओं को ग्रहण करने के लिए एक दुआ भी सिखाई है जिसे हमें करते रहना चाहिए। दुआ यह है- ऐ अल्लाह! मैं तुझसे दुनया और आख़िरत में शरण को मांगता हूँ। मौला! मैं तुझसे दीन व दुनया, धन और घर बार में क्षमा और क्षमाशीलता को चाहता हूँ। ऐ अल्लाह! मेरी दुर्बलताओं को छिपा दे तथा मुझे मेरे भय से अमन दे। ऐ अल्लाह! आगे पीछे, दाएँ बाएँ तथा ऊपर से स्वयं मेरी रक्षा फ़रमा और मैं तेरी महानता की शरण चाहता हूँ कि मैं नीचे से किसी दोष का शिकार हूँ।

अतः जब हम यह दुआ अपने लिए करें तो दूसरों के लिए भी ऐसी ही भावनाएँ रखने वाले हों और जब यह हालत हो जाए तो अल्लाह तआला फिर दुआएँ क़बूल भी फ़रमाता है। अल्लाह तआला करे कि हम उसकी प्रसन्नता को प्राप्त करने वाले बनें।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़ के पश्चात मैं एक जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊँगा जो मुकर्रम मलिक सलीम लतीफ़ साहब एडवोकेट, सदर जमाअत ननकाना साहब पाकिस्तान का है जो मुकर्रम मलिक मुहम्मद शफ़ी साहब के बेटे थे। 70 वर्ष उनकी आयु थी। 30 मार्च 2017 सुबह लगभग 9 बजे घर से अपने बेटे के साथ कचहरी जाते हुए रास्ते में एक अहमदियत के विरोधी व्यक्ति ने फ़ायरिंग करके उन्हें शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। हुज़ूर-ए-अनवर ने शहीद मरहूम के सत्गुण बयान फ़रमाए और फ़रमाया- अल्लाह तआला शहीद के दर्जे बुलन्द करे तथा उनकी संतान को भी उनके पद्चिन्हों पर चलाए, नेकियों में आगे बढ़ाता चला जाए तथा अहमदियत के विरोधियों और दुश्मनों के भी जल्दी पकड़ के सामान पैदा फ़रमाए।